दैनिक जागरण, भोपाल 8 NOV 2010

युवा सरपंच ने बदल दी गांव की तस्वीर

गांव बना गुलाबी, लोग खुद लिख रहे तकदीर

प्रकाश पाण्डेय, भोपाल

युवा सोच क्या लोगों की मानसिकता बदल सकती है। इसका उत्तर यदि लेना है तो राजधानी से कुछ किलोमीटर दूर जाना पड़ेगा, जहां युवा सरपंच ने महज एक साल में ही गांव की तस्वीर बदल दी। न तो निर्मल ग्राम का अभियान और न सरकारी मदद इसके बावजूद हर घर गुलाबी रंग से सराबोर होकर साफ सफाई की मिसाल बन गया। लगभग आठ सौ घरों की आबादी आज पौधरोपण से लेकर जल निकासी के लिए अपनी नाली खुद बनाने में जुट गई है। राजधानी से लगभग बीस किलोमीटर ■ शेष पृष्ठ 8 पर

स्व. लक्ष्मीनारायण शर्मा गांव को जैसा देखना चाहते थे हम वैसा ही प्रयास कर रहे हैं। हर ग्राम वासी हमारे साथ है।
- घनश्याम शर्मा, ग्राम कलारा

हर बच्चा जा रहा स्कूल

स्कूल चलें हम का नारा बुलंद हुआ तो कई गांवों में कागजी खानापूरी कर ली गई। लेकिन कलारा में सब कुछ यथार्थ के धरातल पर हुआ। गांव में मिडिल स्कूल है और छात्रों की संख्या पांच सौ से अधिक है। जो इस बात का प्रमाण है कि गांव का हर बच्चा स्कूल जा रहा है।

पूरे गांव में लगे सीएफएल

ग्राम कलारा में हर घर सीएफएल से जगमगा रहा है। लोगों ने पुराने बल्ब का सहारा लेना खुद ब खुद बंद कर दिया। यहां तक कि गांव की गलियों को रोशन करने का कार्य भी सीएफएल कर रहे हैं।

अब बनाएंगे तालाब

ग्राम सरपंच घनश्याम शर्मा का कहना है कि वे अब तालाब का निर्माण करना चाहते हैं। क्योंकि अल्प बारिश की वजह से तालाब सूख गया है। लोगों को पूरे साल पानी मिले इसके लिए जरूरी है कि तालाब गहरा और विस्तृत हो। उनका कहना है कि स्व. लक्ष्मीनारायण शर्मा भी इस गांव को सबसे अलग देखना चाहते थे। इसलिए इस बार गर्मी के दिनों में लोग तालाब को कुछ इस तरह से विस्तृत रूप देना चाहते हैं कि सभी ग्रामवासियों को पूरी गर्मी पानी मिल सके। खास तौर पर पशुओं के लिए पानी की व्यवस्था हो ताकि लोग पशुपालन से मुंह न मोड़ें।

गांव बना गुलाबी...

दूर ग्राम कलारा को दिवंगत नेता लक्ष्मीनारायण शर्मा की जन्मभूमि के रूप में जाना जाता है। विगत वर्ष गांव के युवक घनश्याम शर्मा को लोगों ने अपना सरपंच चुना। गांव की तरक्की के लिए श्री शर्मा ने जिला प्रशासन, जिला पंचायत और जनपद पंचायत के चक्कर लगाए। कुछ हासिल हुआ लेकिन इतना नहीं कि गांव की तस्वीर बदल सके। अंत में श्री शर्मा ने अपने गांव को खुद ही आदर्श गांव बनाने का बीड़ा उठाया। पहले लोगों ने दो स्टाप डेम बनाए और अल्प वर्षा के बाद भी इतना पानी जमा कर लिया कि आगामी फरवरी तक गांव को पानी मिल सके। हाल ही में जब लोग दीपाली पर्व की तैयारियां कर रहे थे तब सरपंच ने सुझाव दिया कि कुछ ऐसा किया जाए कि पूरा गांव अपनी नई पहचान स्थापित कर ले। लोगों को सरपंच की सलाह उचित लगी और फिर बुजुर्गों से संपर्क कर विचार विमर्श किया गया। सरपंच ने पिंक सिटी का प्रस्ताव किया जिसे लोगों ने तत्काल स्वीकार कर लिया। फिर क्या था सरपंच श्री शर्मा ने गांव के सभी घरों के स्वामियों से आग्रह किया कि वे दीपावली से पहले अपने गांव को गुलाबी रंग देकर गांव की नई पहचान स्थापित करें। सरपंच ने लोगों को पुताई के लिए गुलाबी रंग खरीदकर उपलब्ध कराया और देखते ही देखते पूरा गांव गुलाबी हो गया।